दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड
DSSSB TGT & PGT
ROJGAR With ANKIT
Part-B
SCHOLAR BATCH
संस्कृत
भाषा में परिवर्तन की दशाएँ
Part -2
LIVE 13-04-2024 05:00 PM

५. १९. ध्वनि - परिवर्तन की दिशाएँ

आधुनिक भाषाविज्ञान में इस विषय का अधिक विस्तार से विवेचन हुआ है।

रात्रि = रा + त् र् + इ

(१) समीकरण (Assimilation)

जब दो विषम ध्वनियाँ एकत्र होती हैं तो एक ध्वनि दूसरी ध्वनि को प्रभावित करके अपने सदृश बना लेती हैं। यह समीकरण दो प्रकार का होता है-

→ ① पुरोगामी
→ ② पश्चगामी

समीकरण — आगम
विषमीकरण — लोप

(क) पुरोगामी समीकरण (Progressive Assimilation) -इसमें पूर्ववर्ती ध्वनि आगे की दूसरी ध्वनि को अपने सदृश बनाती है। संस्कृत में रषाभ्यां नो णः (अष्टा० ८-४-१), रदाभ्यां निष्ठातो नः० (अष्टा०८-२-४२), ष्टुना ष्टुः (अष्टा० ८-१-४१) आदि -सूत्र समीकरण प्रस्तुत करते हैं। जैसे-

विष् + नुः = विष्णुः, पुष् + तः = पुष्टः । चक्र > चक्का, अग्नि > अग्गि, पक्व > पक्का, पत्र > पत्ता|

(ख) पश्चगामी समीकरण (Regressive Assimilation) — इसमें परवर्ती ध्वनि पूर्ववर्ती ध्वनि को अपने सदृश बनाती है । जैसे-

शर्करा - शक्कर	धर्म-धम्म	सप्त- सत्त
वल्कल-वक्कल	तत् + लीन - तल्लीन	गल्प-गप्प

सप्त

(२) विषमीकरण (Dissimilation)

यह समीकरण का उल्टा है। इसमें दो सम ध्वनियों में से एक ध्वनि विषम रूप धारण करती है। उच्चारण की सुविधा और अर्थ की स्पष्टता के लिए ऐसा किया जाता है। जैसे—

काक-काग	कंकण-कंगन	पुरुष - पुलिस
मुकुट-मउर (मौर)	गुरु-गरु	षष्-षट्

यह विषमीकरण स्वर और व्यंजन दोनों में होता है। संस्कृत में लिट् लकार, लुङ् लकार और सन् प्रत्यय में कुहोश्चुः (७-४-६२), अभ्यासे चर्च (८-४-५४) सूत्रों से विषमीकरण का ही कार्य होता है। जैसे—ककार > चकार, अगीगणत् > अजीगणत्, किकीर्षति > चिकीर्षति, भुभूषति > बुभूषति।

(३) आगम (Augment, Intrusion) -

उच्चारण की सुविधा के लिए शब्दों के आदि, मध्य या अन्त में कुछ ध्वनियाँ जोड़ दी जाती हैं, इन्हें आगम कहते हैं। इसके मुख्य रूप से तीन भेद हैं— (क) आदि स्वरागम या प्रागुपजन, (ख) मध्यस्वरागम या स्वरभक्ति, (ग) अन्त्य स्वर (अक्षर) आगम।

(क) आदि - स्वरागम, प्रागुपजन (Prothesis) – कभी-कभी उच्चारण की सुविधा के लिए कुछ व्यंजनों, विशेषरूप से संयुक्त व्यंजनों, से प्रारम्भ होने वाले शब्दों के आदि में एक स्वर का आगम हो जाता है, इसको आदि-स्वरागम या प्रागुपजन (प्राक् पहले, उपजन-आगम) या Prothesis (प्रो-पहले, थीसिस - रखना) कहते हैं। पंजाबी और ग्रामीण भाषाओं में इसका प्रयोग अधिक दिखाई देता है। कुछ स्थानों पर आदि-

व्यंजनागम के भी उदाहरण मिलते हैं।

जैसे—

आदि-स्वरागम		आदि-व्यंजनागम
स्त्री - इस्त्री,	स्कूल - इस्कूल	अस्थि - हड्डी
स्नान - अस्नान,	स्टेशन - इस्टेशन	ओष्ठ - होठ
स्तुति - अस्तुति,	प्लेटो - अफलातून	उल्लास - हुलास

आदि-अक्षरागम भी मिलता है। जैसे गुंजा - घुँघची, लैटिन — Schola > फ्रेंच-Ecole (एकल, स्कूल) ।

(ख) मध्य-स्वरागम, स्वरभक्ति (Anaptyxis) — संयुक्त व्यंजनों के उच्चारण में होने वाली असुविधा को दूर करने के लिए बीच में किसी स्वर के आगम को मध्य- स्वरागम कहते हैं। स्वर की भक्ति (भाग, अंश) लगने के कारण इसे स्वरभक्ति (Anaptyxis) और संयुक्त में व्यवधान डालने के कारण युक्त-विप्रकर्ष या विप्रकर्ष (Diaeresis) कहते हैं । मध्य-स्वरागम के तुल्य मध्य-व्यंजनागम और मध्य-अक्षरागम के भी उदाहरण मिलते हैं। संयुक्त व्यंजनों को सरल बनाने के लिए उत्तर-प्रदेश के लोग प्रायः आदिस्वरागम का आश्रय लेते हैं और पंजाबी लोग मध्य-स्वरागम का आश्रय लेते हैं। **जैसे-**

मध्य-स्वरागम		मध्य-व्यंजनागम
स्टेशन - सटेशन	प्रचार - परचार	सुनर - सुन्दर
धर्म - धरम	कर्म - करम	सुनरी - सुन्दरी
भक्त - भगत	प्रसाद - परसाद	वानर - बन्दर
पंक्ति - पंगत	हुक्म - हुकुम	शाप - श्राप

मध्य-अक्षरागम, जैसे— ताम्र - तांबड़ा (मराठी), खल - खरल, आलस- आलकस।

संस्कृत में प्राप्त होने वाले द्विविध रूप स्वर्ण- सुवर्ण, पृथ्वी-पृथिवी, स्वर् - सुवर् आदि मध्य-स्वरागम या स्वरभक्ति के ही उदाहरण हैं।

वैदिक संस्कृत में भी स्वरभक्ति के उदाहरण मिलते हैं। जैसे इन्द्र > इन्दर, दर्शत > दरशत भी बोला जाता है । वर्षतु को वरिषतु (या वऋषतु) और वरेण्यम् > वरेणिअम् भी पढ़ा जाता है। ऋग्वेद प्रातिशाख्य में इसको स्वरभक्ति कहा गया है। यह छोटी स्वर - मात्रा होती है। आधी या उससे भी छोटी मात्रा होने से इसको लिखा नहीं जाता था । ' अवेस्ता भाषा में भी यह प्रवृत्ति देखी जाती है —उपरि > Upairi, भरति > Baraiti ।

(ग) अन्त्य - स्वरागम - अन्त में सुविधा के लिए कोई स्वर जोड़ा जाता है। संस्कृत के हलन्त शब्दों को प्राकृत में अकारान्त कर देते हैं। अंग्रेजी आदि में अन्तिम व्यंजन के बाद कोई स्वर जोड़ देते हैं। **जैसे-**

महत् - महन्त

हनुमत् - हनुमन्त

गच्छत् - गच्छन्त

Rama

जगत् - जगत

ग्रामव - गँवई

ज्वलत् - ज्वलन्त

पत्र - पतई

१. स्वरभक्तिः पूर्वभागक्षराङ्गम् । द्राघीयसी सार्धमात्रा । अर्धोनान्या ।

(४) लोप (Elision)

कभी-कभी मुख-सुख, प्रयत्नलाघव या उच्चारण में शीघ्रता, स्वराघात आदि के कारण कुछ ध्वनियों का लोप हो जाता है। ये लोप तीन प्रकार के होते हैं - १. स्वरलोप, २. व्यंजन- लोप, ३. अक्षरलोप । आदि, मध्य और अन्त भेद से ये तीनों भेद तीन प्रकार के होते हैं।

आदि

मध्य

अन्त

जैसे—

आदि-स्वरलोप (Aphesis)	मध्य-स्वरलोप (Syncope)	अन्त्य - स्वरलोप
अभ्यन्तर—भीतर	राजन् + आ - राज्ञा	घर—घर्
अनाज-नाज	जगम् + अतुः- जग्मतुः	राम–राम्
अगर—गर	Do not—Don't	शिला, सिल्
अपूप-पूप, पूआ	Storey-Story	

आदिव्यंजनलोप	मध्यव्यंजनलोप	अन्त्यव्यंजनलोप
स्थाली—थाली	कति — कई	उष्ट्र — ऊँट
स्थान – थाना	रात्रि —-रात	निम्ब - नीम
स्कन्ध—कंधा	पंक्ति-पाँत	उपाध्याय— उपधिया
श्मशान—मसान	ब्राह्मण— बाम्हन	दण्डिन् — दण्डी
आदि-अक्षरलोप	मध्य- अक्षरलोप	अन्त्य - अक्षरलोप
उपाध्याय -झा	भाण्डागार - भंडार	माता - माँ
आदित्यवार -इतवार	पर्यंकग्रन्थि - पलत्थी	व्यंग्य-व्यंग

(५) समाक्षर - लोप (Haplology)

इसको अक्षर - लोप और सम- ध्वनिलोप भी कहते हैं । जहाँ पर दो समान ध्वनियाँ एक के बाद दूसरी आती हैं, वहाँ पर उच्चारण की सुविधा के लिए उनमें एक का लोप कर दिया जाता है। यह नाम अमेरिकन भाषाविज्ञानी प्रो० ब्लूमफील्ड (Bloomfield) ने दिया है। यह दो शब्दों को मिलाकर बना है - १. ग्रीक शब्द Haplous = एक, २. ग्रीक शब्द Logos शब्द, अर्थात् दो ध्वनियों के स्थान पर एक ध्वनि का शेष रहना ।

जैसे-

शेववृध — शेवृध

जहीहि - जहि

शष्पपिंजर — शष्पिंजर

वितस्ति —बित्ता, बीता

नाककटा - नकटा